जन्मपत्रिका विश्लेषण

प्रिय गीता जी,

जन्म लग्न- कन्या: आपके जन्म के समय क्रांतिवृत के पूर्वी क्षितिज पर कन्या राशि का उदय हो रही थी, इसलिए आपका जन्म लग्न कन्या है। आपका स्वभाव एवं व्यक्तित्व कन्या राशि के समान है। यह पृथ्वी तत्व राशि है। आप में पृथ्वी के समान गुण विद्यमान हैं। आप में अपार धैर्य है और आप असीम उर्वरा शक्ति की धनी हैं। आप प्राय: जीवन की कठोरता से विचलित नहीं होतीं, क्योंकि आप अपनी राह स्वयं बनाने में विश्वास करती हैं। आपके लग्नेश बुध हैं जो बुद्धिमान ग्रह हैं, इसलिए आप प्रखर एवं अन्वेषणी बुद्धि की धारक हैं। इस राशि का प्रतीक चिह्न कुंवारी कन्या है, इसीलिए आप शुद्धता की पुजारी हैं और शुद्धता एवं स्वच्छता को ईश्वर तुल्य समझती हैं। आप अपनी कसरत और शारीरिक सौष्ठव का पूर्ण ध्यान रखती हैं। खेलों में आपकी अभिरुचि है, आप या तो खेलों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं अथवा वैकल्पिक रूप से भाग लेती रहती हैं। गणित और सांज़्यिकी पर आपका अच्छा अधिकार होता है। आप महत्वपूर्ण निर्णय सोच समझकर लेती हैं। आप संवेदनशील हृदय की हैं और प्रयास करती हैं कि आप के कारण किसी की भावनाएं आहत नहीं हों। आप व्यवस्थित कार्यप्रणाली की हैं और आप पर नियंत्रण रहने पर आप उत्कृष्ट परिणाम भी दे सकती हैं। कन्या द्विस्वभाव राशि है। चाहे घर, कार्यक्षेत्र अथवा विचार किसी भी स्तर पर हो, आप बदलाव लाने की प्रबल पक्षधर हैं। आप में अद्‌भुत ग्रहण क्षमता है, परिवर्तन को तत्काल स्वीकार कर लेती हैं तथा सहजता से हर एक परिस्थिति में समायोजित हो जाती हैं। आप सदैव पूर्ण मानसिक संतुलन बनाए रखती हैं और घोर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आसानी से अपना मानसिक संतुलन नहीं बिगड़ने देती। आप कला, साहित्य और आध्यात्मिकता में रुचि रखती हैं, यदि आप ईमानदारी से इन क्षेत्रों में प्रयास करें तो असाधारण परिणाम लाकर दिखा सकती हैं। आप निपुणता की उपासक हैं और आपकी अपेक्षाओं तक पहुँच पाना बहुत कठिन होता है। आप किसी भी कार्य को पूर्ण समग्रता से करती हैं। कन्या स्त्री राशि है, जिससे आपके व्यवहार में मृदुता एवं सौज़्यता प्रकट होती है। स्वास्थ्य का पाया डांवाडोल बना रहता है। आप सदैव चिंतनशील रहती हैं तथा चमत्कारिक एवं उपयोगी विचारों को जन्म देती हैं। आप अपनी संजीदगी एवं ईमानदारी के लिए प्रशंसा पाती हैं।

कभी-कभी आप विश्लेषणों में उलझी रहती हैं और समय पर निर्णय लेने से चूक जाती हैं। आपका अन्तर्मुखी व्यवहार कभी-कभी पराकाष्ठा पर होता है और लोग आपको स्वार्थी एवं अहंकारी समझने लगते हैं। निपुणता की चाह में आप बातूनी और परान्वेषी बन जाती हैं। ईश्वर ने आपको संवेदनशील स्नायुमंडल दिया है, इसलिए आप अनावश्यक तनावों से बचने का प्रयास करें।

जॉन.एफ.केनेडी, टाइगर वूड्स, गायिका अल्का याज्ञिक, एलिजाबेथ टेलर, गुरुदत्त, किक्रेटर-जयवर्धने, कपिल देव आदि महान व्यक्तित्व इसी लग्न में जन्मे हैं।

जन्म नक्षत्र: कृत्तिका

यह चंद्रमा के सौर पथ में तृतीय नक्षत्र है। कृत्तिका का साहित्यिक अर्थ है 'काटने वाला'। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस नक्षत्र में सप्त तारे हैं जिन्हे सप्तऋषियों की पत्नी माना जाता है इसलिए आप में भरपूर स्त्रियोचित गुण विद्यमान हैं। कृत्तिका का अर्थ काटने वाला अर्थात कुल्हाड़ा, चाकू, तेज धारदार अस्त्र होता है अत: यही इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह भी है। आपमें सृजनात्मकता एवं ध्वंसात्मकता दोनों में अंतर या भेद करने की विवेक बुद्धि है। आप पर्याप्त आत्मविश्लेषण करती हैं तथा अपने चरित्र में परिव्याप्त दुर्गुणों एवं दोषों को दूर करके मानवोचित गुणों का विकास करती रहती हैं। आप पाप या बुरे के विरुद्ध खड़े होने में सकुचाती हैं। आपके जन्म नक्षत्र के देवता 'अग्नि' हैं। आप अग्नि के

समान तेजवान हैं जो कई बार आपको अनुकूल ताप देकर प्रसन्नता प्रदान करती है तो कभी-कभी आपको जलाकर राख कर देती है। आपकी मुखमुद्रा पर आकर्षण, तेज एवं ओज के कारण लोग आपकी ओर खिंचे चले आती हैं। आप पूर्णता एवं कुशलता की पक्षधर हैं। जब आपके भीतर विद्यमान अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है तो आप क्रोधी, आक्रामक एवं हिंसक हो उठती हैं और आप ऐसी अवस्था में बहुत क्रूर भी हो सकती हैं।

जन्म राशि-वृषभ: वृषज़ पृथ्वी तत्व एवं स्थिर राशि है तथा इस राशि में चंद्रमा उच्च स्थिति अर्थात् शुभ व बली होती हैं। वृषभ शुक्र की राशि होती है तथा इस राशि में चंद्रमा शुक्र के गुणों का प्रदर्शन करने लगती हैं। आप ईश्वर भक्त हैं तथा अपनी परंपराओं का सज़्मान करती हैं। आपकी विनम्रता एवं उदारता आपको उत्कृष्ट सृजनधर्मिता एवं प्रबल सहनशक्ति प्रदान करती है। आप जिस कार्य में हाथ डालती हैं, बहुत जल्दी ही उसमें सिद्धस्त हो जाती हैं। आप बहुत भावना प्रधान है तथा दूसरों के कष्टों में तुरंत शामिल हो जाती हैं। आपकी भावनाओं में वास्तव में व्यावहारिक दृष्टिकोण छिपा रहता है। आप धर्मार्थी हैं तथा कुछ ऐसा करना चाहती हैं जिससे दूसरों के चेहरे खिल उठें। आप सांसारिक भोगों एवं सुखों के भोग की अपेक्षा रखती हैं। आप उच्च पद की महत्वाकांक्षा रखती हैं तथा आप सांसारिक भोग एवं पद-प्रतिष्ठाओं की प्राप्ति के लिए भरसक प्रयत्न करती हैं। यदि आप किसी चीज की इच्छा करती हैं तो आप उसे प्रबल वेग एवं उत्साह के साथ प्राप्त करके रहती हैं। इंद्रिय भोगों के प्रति भी आपकी यह भावना इतनी ही प्रबल होती है, इसलिए आपको सावधान रहना चाहिए कि आपकी भावना मोह के बंधन में न बंधे। चूंकि आपमें कलात्मक भाव निहित है, इसलिए आपकी कार्यप्रणाली बहुत व्यवस्थित एवं एक विशेष लययुक्त होती है। इसीलिए आप अपने कार्य में पूरा आनंद उठाती हैं। आपकी सहृदयता एवं उदारता के कारण आप अपने मित्र वर्ग में सज़्मान पाती हैं। आपको अपनी एकाग्रता पर ध्यान देना चाहिए और आपको गर्व भी होना चाहिए कि आपमें एकाग्र होने की प्रवृत्ति है।

प्रथम भाव: आपकी पत्रिका में लग्नेश बुध अपनी उच्च राशि में लग्न में ही सूर्य के साथ स्थित हैं। लग्नेश का लग्न में होना तथा सूर्य का लग्न में होना इस बात का संकेत हैं कि आपमें प्रबल आत्मविश्वास है तथा आप अच्छी नेतृत्व क्षमता की धनी हैं।

राजसत्ता एवं राज्याधिकार (शासन) का अधिष्ठाता ग्रह सूर्य, बुद्धि, व्यापार तथा वाणी के स्वामी बुध की राशि में स्थित हैं। आप नम्र भाषी हैं तथा प्रतिकूल परिस्थिति में भी आवेश में नहीं आकर युक्तिपूर्वक हल निकाल लेते हैं। कला, संगीत और साहित्य का आपके जीवन में विशेष महत्व है। आप इन कलाओं में निपुणता प्राप्त करने की इच्छा रखती हैं। आप स्वार्थी मन की एवं व्यावहारिक हैं। आपकी संतुलित मानसिकता दूसरों पर विजयी बनाती है। आपको अपनी स्वार्थ प्रवृत्ति पर ध्यान रखना चाहिए ताकि मन में धूर्त विचार नहीं आने पाएं। आप बहुत जिद्दी नहीं हैं और यदि जरूरत पड़े तो आप सामंजस्य भी स्थापित कर लेती हैं, कभी-कभी आप बहुत अधिक अंतर्मुखी बन जाती हैं जिसे लोग आपकी स्वार्थ प्रवृत्ति समझने लगती हैं। आपको जीवन में बड़े लाभ प्राप्त करने के लिए छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

कन्या पृथ्वी तत्व एवं द्विस्वभाव राशि है जिसके स्वामी बुध हैं। बुध की सृजनात्मकता एवं मधुर भाषा के गुण आप में विद्यमान हैं। आप किसी भी विषय को कुशलतापूर्वक ग्रहण करने में चतुर हैं। आपकी जीविकापार्जन के कई स्त्रोत हो सकती हैं। आप खूब कमाती हैं तथा अनाप-शनाप खर्च भी कर देती हैं।

आप बड़े बुजुर्गो एवं विद्वानों का सज़्मान करती हैं। आपकी ईश्वर में आस्था है। यद्यपि आपका सामाजिक दायरा बहुत छोटा होता है, फिर भी आप इन्सान की परख कर लेती हैं।

आप परहित साधन में लीन रहती हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहती हैं। स्वभावत: उतार-चढ़ावों के कारण आप कई अवसरों पर संतुलन खो बैठती हैं परन्तु अगले ही क्षण आप शांत भी जाती हैं। आप प्रभावशाली व्यक्तियों की ज़ी कठोरता आलोचना कर सकती हैं।

राजसी एवं शासक ग्रह सूर्य आपको साहसी बनाती हैं तथा आपको चुनौतियों का सामना करने हेतु प्रबल इच्छा शक्ति प्रदान करती हैं। आप एक जानेमाने व्यक्ति हैं तथा मित्रगण में आपको सम्मान मिलता है। आपको राजकीय अधिकारियों से पूर्ण समर्थन एवं सहयोग मिलता है। आप घोर अहंकारी, घमण्डी हैं और आपका घमण्ड आपके लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। आप निर्भीक एवं अवसरवादी हैं। आपका व्यवहार कठोरहृदयी एवं अधीरता लिये हुये होता है। आप अपने निर्णयों पर दृढ़ रहती हैं तथा आपको राजनीति के क्षेत्रों में सफलता मिल सकती है और आप जीवन में सुख-सुविधाओं का भोग करती हैं। आपको दृष्टि संबंधी दोष हो सकते हैं।

प्रथम भाव में स्थित ग्रहों की दुनिया में बुद्धिमान माने जाने वाले राजकुमार ग्रह बुध आपके विचारों में शुद्धता एवं स्पष्टता देती हैं। सत्य बोलना आपको प्रिय है और शास्त्र तथा धार्मिक गतिविधियों में गहरी आस्था। काव्य लेखन और गणित में आपकी गहन लगन होती है। आपका मधुर स्वागत लोगों को आकर्षित करता है। आप हंसी-मजाक, तर्क एवं बुद्धिमता को पसंद करती हैं। रहस्य विद्याओं में आपकी रुचि हो सकती है और आप अपनी सूझबूझ के आधार पर कई बार किसी घटना का उचित समय और स्थान का पता लगा लेती हैं।

द्वितीय भाव: कुटुंब, वाणी, दूरदर्शिता और धन-संपदा का कारक भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में तुला राशि है जिसके स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में ही मंगल और राहु के साथ स्थित हैं। द्वितीयेश का द्वितीय भाव में होना इस बात का संकेत हैं कि आप अच्छी वाक् कौशल का परिचय हर जगह देती हैं, आपकी वाणी मधुर है तथा आप खाने-पीने की शौकीन भी हैं। आपमें उच्चकोटि का प्रतिभा है जिसका प्रदर्शन आप समयानुसार लगातार करती रहती हैं और अन्य लोगों को अपनी वाणी के प्रभाव से अपना बनाने की सामर्थ्य रखती हैं। **शुक्र के साथ राहु और मंगल का होना इस बात का भी संकेत है कि आपकी वाणी में कटाक्ष के पुट बहुत अधिक मिलते हैं। आपको अपनी इस वृत्ति पर रोक लगाने के पर्याप्त प्रयास करने चाहिएं क्योंकि कई बार आपके द्वारा किए गए व्यंग्य रिश्तों को बहुत गहराई तक छू जाते हैं और परिवार के व्यक्ति कई बार आपसे अलगाव की सोच लेते हैं। यद्यपि आप इस बात पर पुनर्विचार जब करती हैं तो खेद भी व्यक्त करती हैं परन्तु फिर भी आपको थोड़ा सावधान अवश्य रहना चाहिए।**

आपकी जन्म-पत्रिका में धन भाव में शुक्र की स्थिति आपको पर्याप्त धन और संपति प्रदान करती है। आपको अपने परिवार के सदस्यों, संगे-सम्बन्धियों और मित्रगणों से धन संबंधी लाभ मिल सकते हैं। आपमें काव्य मन छिपा हुआ है और आप मधुरवाणी के धनी हैं तथा सभाओं में प्रभावशाली वाणी से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देती हैं। आप एक से अधिक स्त्रोतों से धन कमा सकती हैं। परिवार में आपका मान-सम्मान होता हैं। यह आपके लिए सुखकारक स्थिति है। आप दयालु स्वभाव की हैं और आप जीवन में अच्छी शिक्षा प्राप्त करती हैं। आपमें अथाह कल्पनाशक्ति है, इसलिए आप जीवन में एक सृजनधर्मी लेखक बनकर प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त करती हैं।

तुला वायु तत्व और चर राशि है। जिसके स्वामी शुक्र हैं। आपकी जन्मपत्रिका में शुक्र वायु तत्व और चर राशि में स्थित हैं जो आपको चचंल बनाती हैं और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती हैं। आप अपने परिवार के साथ सामाजिक और मनोरंजन गतिविधियों में भाग लेती रहती हैं क्योंकि आपका मानना है कि जीवन में खुशी के लिए सुन्दरता और सौहार्द्रता अत्यावश्यक है। आप अपने जीवन में निजी प्रयासों से सफलता प्राप्त करती हैं। आपमें निर्भीक होकर अपनी नई दुनिया बनाने की क्षमता है और आप भावनाओं में बहने वाली एवं अहिंसक प्रकृति की हैं। आप अपनी संस्कृति और प्रतिष्ठित विरासत की प्रशंसक है। धनवान और प्रभावशाली व्यक्ति होने के कारण आपके सम स्तर के लोग आपको बहुत पसंद करते हैं। प्रभावशाली व्यक्तियों को आकर्षित करने की युक्ति आपको अप्रत्यक्ष लाभ पहुंचाती है। आप कुछ धार्मिक संस्थाओं के प्रधान हो सकती हैं। आपको यथेष्ट ऋण मिल सकते हैं और उन्हें आप अपनी सुविधानुसार आसानी से चुका सकती हैं। आपको अपने विरोधियों से सदैव सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वे आपसे ईर्ष्या करते रहते हैं।

द्वितीय भाव में मंगल: आप शीघ्र ही क्रोधित हो जाती हैं तथा उत्तेजित हो पड़ती हैं। अपनी वाणी में रूखेपन को कम करने प्रयास करें। आपकी विलासी प्रवृत्ति के कारण परिवार में अशांति फैलती है। आप जुआ-सट्टा खेलने में रुचि रखती हैं। आपको यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि 'ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।' आपके बहुत से विरोधी आपसे शक्तिशाली हो सकते हैं। आपको आपने आचरण में अनुशासन एवं संयम को स्थान देना चाहिए अन्यथा परिवार सदस्य आपसे दूरी बनाने लगेंगे। आपकी जन्म पत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित महत्वाकांक्षी मंगल आपको उदार बनाता है और कठोर परिश्रम द्वारा धनार्जन करने का साहस प्रदान करता है। आप अति उदार एवं समायोजन प्रकृति के भी हो सकता है। आप व्यवहार में बहुत पटु हैं। आप अपनी मेहनत से धनसंपदा अर्जन करती हैं और आपको अपने जन्मस्थान से दूर सफलताएँ मिलने की संभावना रहती हैं। कभी-कभार आप वाणी में कठोर शब्दों का प्रयोग कर लेती हैं, आपको वाणी में नम्रता एवं मृदुता लानी चाहिए एवं लानी चाहिए एवं जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचना चाहिए।

आपकी जन्मपत्रिका में मंगल तुला राशि में स्थित है जिसके स्वामी शुक्र है। शुक्र सांसारिक भोगों में लिप्त रखते हैं, मंगल और शुक्र की सप्तम भाव में युति होने पर सांसारिक भोगों में लिप्तता बढ़ जाती है। यह संभव है कि आपके जीवन के अंतिम समय आप सांसारिक भोगों से विरक्त हो जाएं और सन्यास ग्रहण कर लें। आप जीवन में पर्याप्त भ्रमण करेंगे।

आप जिज्ञासु, उत्साही, आवेगशील और नेतृत्व गुणों से युक्त है। आप निज प्रयासों से अपनी राह बनाती हैं और सांसारिक भोगों को प्राप्त करने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहती। आप अति महत्वाकांक्षी है, इसलिए कभी-कभी आप अनैतिक व्यवसायों में भी लिप्त रह सकती हैं। आप में नेतृत्व नायक का गुण आपको अड़ियल जिद्दी बनाता है और कभी-कभी आप अपने बड़ों का अपेक्षित परिणामों के लिए किसी भी प्रकार के साधनों का सहारा ले लेती हैं। आप में अपमान भी कर देती हैं तथा उनसे झगड़े भी ले लेते है। आप असफल होने से डरती हैं इसलिए आप अपेक्षित परिणामों के लिए किसी भी प्रकार के साधनों का सहारा ले लेते है। आपका लक्ष्य सुनिर्धारित होता है एवं आप जीवन में एक अच्छा ओहदा प्राप्त करने में सफल रहती हैं। आप अपने मित्रजन एवं बंधु-बांधवों के प्रति उदार एवं सहृदयी रहती हैं परंतु आपकी अहंकारी प्रवृत्ति आपके अपमान भी कर देती हैं। आप सांसारिक भोगों को प्राप्त करने के प्रति महत्वाकांक्षा रखते हैं तथा अपेक्षित परिणामों के लिए यथेष्ठ प्रयास करती हैं। आप दुर्घटनाग्रस्त हो सकती हैं इसलिए आपको अति सावधानीपूर्वक वाहन चलाना चाहिए। आपकी आगे रहने नेतृत्व गुण की प्रवृत्ति कई बार आपके अपराधों में उलझा देती हैं।

तुला में राहु-आपकी जन्मपत्रिका में राहु तुला में स्थित है जो राहु की मित्र राशि है। राहु और शुक्र के बीच अच्छे सम्बन्ध अच्छे परिणामों के संकेत हैं। आप संबंधों में बंधुता, भाईचारा और संतुलन बनाए रखने के प्रबल समर्थक हैं। आप सामाजिक कार्यों में कोई भी कूटनीतिक कदम उठा सकती हैं। आप अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के हैं परन्तु साथ ही आप दूसरों से काम निकालने में भी दक्ष हैं। विशेषत: अपनी लौकिक भोगेच्छाओं की पूर्ति के लिए आप कठोर परिश्रम करती हैं। आपमें उच्च किस्म की सृजन क्षमता है। आपको अपनी कार्यक्षमता में व्याप्त संभावनाओं का विकास करना चाहिए और अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए। यदि कोई सामाजिक या लोक कल्याण के कार्य में आप जुट जाएं तो आप उत्तम श्रेणी की दलीय भावना का परिचय देती हैं और लक्ष्य प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयासों में अहम भूमिका निभाती हैं।

तृतीय भाव: तृतीय भाव पराक्रम, साहस, बुद्धिमता एवं अनुज भ्राता का है। आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में वृश्चिक राशि है जिसके स्वामी मंगल दूसरे भाव में राहु और शुक्र के साथ स्थित हैं जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। मंगल आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव के भी स्वामी हैं और अष्टमेश का दूसरे भाव से संबंध इस बात की

ओर भी संकेत करता है कि आपको धनहानि भी होती रहती है। स्वास्थ्य पर भी इसका कई बार प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है अत: आपको स्वास्थ्य संबंधी छोटी-छोटी समस्याओं के प्रति भी असावधान नहीं रहना चाहिए।

चतुर्थ भाव: चौथा भाव माता, अचल सज़्पत्ति, शिक्षा, वाहन और सामान्य सुखों का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में धनु राशि है जिसके स्वामी देवगुरु बृहस्पति नवम भाव में चंद्रमा के साथ स्थित होकर गजकेसरी योग की सृष्टि कर रहे हैं। चतुर्थेश का नवम में स्थित होना राजयोगकारी स्थिति है। इसका अर्थ यह भी है आपके पास अथवा आपके नाम से एक से अधिक सज़्पत्तियां होंगी, वाहन सुख आपको पर्याप्त मिलेंगे तथा धन की कमी होने पर भी आपके कोई कार्य इस कारण से नहीं रुकेंगे।

पंचम भाव: पंचम भाव संतान, भावनाओं, ईश्वर में आस्था तथा पूर्वजन्म के कर्मों के फल का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में मकर राशि है जिसके स्वामी शनि एकादश भाव में कर्क राशि में स्थित हैं। पंचमेश का एकादश में स्थित होकर पंचम भाव को देखना इस बात का संकेत करता है कि पद संबंधी लाभ आपको सदैव बने रहेंगे। यदि आप कार्यरत हैं तो भी और यदि आप गृहिणी हैं तो घर में आपका पर्याप्त सज़्मान और आपके पदानुरूप (प्रत्येक रिश्ते के अनुसार) सज़्मान निरन्तर मिलता रहेगा।

षष्ठम भाव: छठा भाव रोग, ऋण, रिपु और प्रतिस्पर्धा का है। आपकी जन्मपत्रिका के षष्ठम भाव में कुंभ राशि है जिसके स्वामी शनि एकादश भाव में हैं जिस कारण कभी-कभी धन हानि और शत्रुओं के द्वारा विशेष रूप से धन हानि बनी रहेगी। आपको चाहिए कि अनजान व्यक्ति पर विश्वास न करें और अपनी प्रतिस्पर्द्धात्मक शक्ति को लगातार बढ़ाती रहें।

सप्तम भाव: सप्तम भाव विवाह, वासना, वैवाहिक स्थिति और व्यापारिक साझेदारी आदि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में मीन राशि है जिसके स्वामी देवगुरु बृहस्पति नवम भाव में चन्द्रमा के साथ स्थित हैं। सप्तमेश की नवम में स्थिति विवाह उपरान्त अधिक भाग्योदय का संकेत है। बृहस्पति का चन्द्रमा के साथ होना इस बात की ओर भी इंगित करता है कि आपके जीवनसाथी चंचलमना हैं और कई बार अनिर्णय की स्थिति में रहती हैं। ऐसी स्थिति में विवेकपूर्ण निर्णय की आशा वे आपसे ही करती हैं।

अष्टम भाव: अष्टम भाव आपदाओं, रहस्यों, भय, बाधाओं, गुप्त रहस्यात्मक विषयों आदि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में मेष राशि है जिसके स्वामी मंगल दूसरे भाव में राहु के साथ स्थित हैं। द्वितीय भाव में स्थित मंगल अष्टम भाव को देख रहे हैं। आप ज्ञान पाने में अधिक रुचि लेती हैं और रहस्यों या विषयों की तह तक जाना आपके स्वभाव में है। शोधपरक कार्य भी आप बहुत रुचि लेकर कर सकती हैं। अत: यदि आप गृहिणी हैं तो भी और यदि कार्यरत हैं तो भी पुस्तकों और अन्य संचार साधनों से अपना जुड़ाव निरन्तर बनाएं रखें। आपकी जन्म पत्रिका के अष्टम भाव में केतु स्थित हैं जो कि स्वयं के ही नक्षत्र में हैं। आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए और एलर्जी आदि की शिकायत आपको सदैव बनी रह सकती है। अधिक उम्र होने पर पाइल्स की समस्या भी जन्म ले सकती है अत: अपने खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

आपकी जन्मपत्रिका में केतु मेष राषि में है। मेष अग्नितत्व राशि है और केतु भी अग्नि तत्व प्रधान ग्रह माने जाती हैं। अत: आप जोशीले व्यक्तित्व के हैं और आपमें विध्वंसकारी शक्ति विद्यमान है। आप किसी अन्य के आदेश या मार्गदर्शन को कतई पसन्द नहीं करती हैं अपितु अपनी मंजिल स्वयं तय करती हैं। कई बार आपके कार्यों के कोई कारण या आधार निर्धारित नहीं होते। सामान्यत: आप दूसरे लोगों से सदैव अलग विचार, अलग अभिरुचियां और अलग इच्छाएं रखती हैं। अपने भीतर निहित प्रचण्ड शक्ति के कारण आप अपने आस-पास हो रहे बुरे और गलत कामों के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर देती हैं परिणामों की परवाह नहीं करते। इसी शक्ति के कारण कइ बार अपनों से अलग-थलग पड़

जाती हैं। केतु की यह स्थिति आपको आध्यात्म के क्षेत्र में बुलन्दियों तक पहुंचा देती है और आप ज्ञान पिपासु बन जाती हैं। अपने अथक प्रयास और परिश्रम के बल पर आप भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में सफल रह सकती हैं।

नवम भाव: नवम भाव उपासना, धार्मिक आस्था, आपका आध्यात्मिक जुड़ाव, दार्शनिक विचारधारा, ज्ञान पिपासा, भाग्य और सुख समृद्धि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में वृषभ राशि है जिसके स्वामी शुक्र दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित हैं। परिवार से आपको पर्याप्त सहयोग मिलेगा और पैतृक सज़्पत्ति संबंधी लाभ भी आपको मिल सकती हैं।

आपकी जन्म पत्रिका में बहस्पति शुक्र की राशि में स्थित हैं परंतु शुक्र और बृहस्पति नैसर्गिक शत्रु हैं। आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे तथा आपको पग-पग पर बाधाएं झेलनी होंगी। प्रतिष्ठित देवगुरु बृहस्पति यहां भद्र ग्रह शुक्र से प्रभावित है जो आपको दयाभाव एवं सहानुभूतिपरक स्वभाव प्रदान करती हैं। आप अपनी बुद्धिमत्ता-विद्वता और सृजनधर्मिता के लिए विज़्यात होती हैं। आप सामाजिक संबंधों को समुचित सज़्ज्ञान देती हैं एवं उन्हें बनाए रखने के लिए आपको कठोर प्रयास भी करने पड़ती हैं। आप व्यवहारिकता का कठोरता से पालन करती हैं। आपको स्त्रीपक्ष से लाभ हो सकता है। आपको अपने अन्तर्मुखी स्वभाव के आधार पर भी अपने सामाजिक संबंधों एवं गतिविधियों को बनाए रखना होगा। आप आरामदेह एवं विलासी जीवन पसंद करती हैं और इसे प्राप्त करने के लिए आप कठोर प्रयास भी करते रहती हैं। आप उदारमन के व्यक्ति है तथा सीखने को लालायित रहती हैं। धर्म में आपकी अगाध श्रद्धा है तथा ईश्वर में परम आस्था। आप स्वप्रेरणा के धनी हैं एवं उसकी अवहेलना कभी भी नहीं करते।

नवम में बृहस्पति शुभ एवं अनुकूल होती हैं। आप सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित होने की अभिलाषा रखती हैं और उसे प्राप्त करने हेतु कठोर परिश्रम करती हैं।आप धर्म और दर्शन में गहरी आस्था रखते हैँ। आप परज़्परावादी एवं सिद्धान्तप्रिय हैं। आप धर्मार्थ कार्यों में गहरी अभिरुचि रखते हैं। आप ज्ञानपिपास्तु हैं तथा ज्ञान प्राप्ति की खोज में रत रहती हैं। आपमें दूसरों को संरक्षण देने की प्रबल क्षमता है। आपको अपने व्यक्तित्व को संरक्षण प्रदान करने हेतु संवारते रहना चाहिए। आपको दूसरों की भलाई में किए गए कार्यों के लिए समुचित सज़्मान मिलता है। आप कर्तव्यनिष्ठ हैं तथा अपने कार्यों को सही ढंग से करती हैं।

आपकी जन्म पत्रिका के नवम भाव में स्थित चंद्रमा सज़्पन्नता, प्रसन्नता और सुख प्रदान करती हैं। आप शास्त्रों के मर्मज्ञज्ञाता तथा दिव्य गुणों के धारक हो सकते हो। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक कार्यों में रहती है तथा आप जरूरत पड़ने पर लोगों की सहायता करते हो। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलती है। धार्मिक संस्थानों की स्थापना में आपकी गहरी अभिरूचि होती है। आप एक सज़्मानित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होती हैं। आप अपने पैतृक व्यवसाय में गहरी अभिरूचि लेकर इसे विकास की और ले जाने के लिए कठोर प्रयास करती हैं। आप यात्राओं के शौकीन हैं तााि आपके पास कई अचल सज़्पतियाँ रहती है।

दशम भाव: दशम भाव पिता, व्यवसाय, व्यापार, आजीविका, राजकाज से लाभ, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा आदि का है। आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में मिथुन राशि है जिसके स्वामी बुध लग्न में ही अपने मित्र सूर्य के साथ स्थित हैं। सूर्य द्वादशेश हैं। द्वादशेश का दशम भाव के स्वामी के साथ स्थित होना परिवार अथवा जन्म स्थान से दूर सफलता के संकेत देता है।

एकादश भाव: एकादश भाव बड़े भाई, आय, लाभ, जीवन में विलासिताओं तथा निपुणता का है। आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में कर्क राशि है जिसके स्वामी चन्द्रमा नवम भाव में देवगुरु बृहस्पति के साथ स्थित हैं। एकादश भाव में शनि की स्थिति शुभ कही गई है तथा शनि पंचमेश होकर यहां से पंचम भाव को प्रभावित कर रहे हैं यह भी एक अच्छा संकेत है।

आपकी जन्मपत्रिका में शनि जलीय राशि में स्थित है जो भावप्रवण चंद्र ग्रह की राशि है। आपके स्वभाव में आवेश-संवेग बहुत आते रहती हैं। आपमें अधिकार भावना ईर्ष्या की हद तक भरी हुई है। कई बार आप बहुत शंकालू हो जाती हैं तथा अपने निकटस्थों की भावनाओं को आहत कर देते हो। स्वभावगत अस्थिरता के बावजूद भी आप उदार एवं संजीदा है। विषम परिस्थितियों का आप डटकर मुकाबला करती हैं। विचारक शनिदेव कल्पनाशील चंद्र से युति करके आपको गहन विचार करने को विवश करती हैं और किसी भी स्थिति को समझने में सहायक होती है। समय-समय पर आप अंहवादी बन जाती हैं और जल्दी ही अपने किये पर पछताती हैं। आपके लिए ज्योतिषीय सलाह दी जाती है कि आप कुछ समय ध्यान-उपासना किया करें इससे आपको मानसिक शांति मिलेगी।

आपके अधीन लोग कार्य करेंगे। यद्यपि आप बहुत सामाजिक तो नहीं है तथापि आपके अपने उच्चाधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। आप नेतृत्व क्षमता रखती हैं तथा अपने स्तर पर राजनीतिक रूप से भी सक्रिय हो सकती हैं। आप पर्याप्त धन कमाती हैं। आपकी भूसंपदा होगी। आप अपने क्षेत्र में दक्ष होने में विश्वास करती हैं। आपको जीवन में बहुत कम जोखिम लेनी चाहिए अन्यथा आपको सजग रहकर कार्य करने चाहिए जो समय रहते समाप्त भी हो जाएगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

द्वादश भाव: द्वादश भाव अवसाद, शैयासुख, हानि और व्यय, उदारता तथा विदेश संबंधी मामलों का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में सिंह राशि है जिसके स्वामी सूर्य लग्न में स्थित हैं। द्वादशेश का लग्न से संबंध स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की ओर भी संकेत करता है। आपको इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

विंशोत्तरी दशा

राहु-सूर्य (01.12.09 से 26.10.10) इस अवधि में मन में उच्चाटन का भाव रहेगा, अत्यधिक यात्राएं होंगी और खर्चा भी बहुत अधिक होगा। किसी आकस्मिक घटना से सारा परिवार हत्प्रभ रह जाएगा। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं कुछ परेशानी में रखेंगी। इस समय पति से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्रों में परेशानियों के बाद भी कुछ काम बनते से नजर आएंगे। जीवनसाथी के लिए गर्मियों के बाद अच्छा समय है और नौकरी, व्यापार संबंधी गतिविधियों में तेजी आएगी।

यह समय बड़े भाई-बहिनों के लिए समय शुभ है।

राहु-चंद्र (26.10.10 से 26.04.12) अपार मानसिक चिंताओं के बीच भी भाग्योदय का समय है और आर्थिक लाभ होगा। भूमि-भवन या वाहन में निवेश होगा तथा आप इस समय अत्यधिक उन्नति करेंगे। बड़े भाई बहिन के लिए यह अच्छा समय है तो उनके जीवन साथियों के लिए अपेक्षाकृत अच्छा समय है। यदि किसी भूमि या भवन का विक्रय करना चाहें तो लाभ दे सकता है। गाड़ी बदलते समय सावधानी बरतें और मुहूर्त का ध्यान रखें।

इस समय अत्यधिक धार्मिक रुचि हो जाएगी और आप बहुत बड़े लोगों के सम्पर्क में आएंगे। जनसम्पर्क बढ़ेगा व बड़े लोगों से मिलना होगा। जीवनसाथी के लिए आजीविका के नए अवसर मिल सकते हैं या वे जहां हैं वहां उन्नति मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे और वर्तमान कार्य को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आप कुछ नया करेंगे। अपने वर्तमान विषयों में एक नया विषय भी जोड़ सकते हैं। वजन बढ़ेगा क्योंकि खाने-पीने पर नियंत्रण नहीं रख पाएंगे। वजन घटाने का प्रयास भी करेंगे पर बहुत अधिक सफल नहीं हो पाएंगे।

यदि किसी साझेदारी के व्यवसाय की बात आए तो बहुत सावधानी बरत कर ही आगे बढ़ना है। यदि पूर्व में साझेदारी हो तो सावधानी के साथ चलें। यदि कोई साझेदारी का कार्य नहीं है तो कोई चिंता की बात नहीं है।

राहु-मंगल (26.04.12 से 14.05.13) यह अन्तर्दशा स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से ज्यादा अच्छी नहीं है और कोई न कोई समस्या चलती रहेगी। राहु महादशा की अंतिम अन्तर्दशा है जिसमें कुछ बातें इस तरह की होंगी जिनसे मन प्रसन्न

नहीं होगा। कलह का वातावरण रहेगा और बार-बार कोई न कोई चिंता उत्पन्न होगी। इस समय खाने में अत्यधिक सावधानी बरतनी है और खान-पान संबंधी किसी गलती के कारण स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। भोजन में प्रदूषण या किसी विषाक्त भोजन के कारण किसी एक अवसर पर बड़ी कठिनाई होगी। रक्त विकार और अनियमित भोजन के कारण पित्त विकार प्रमुखता से रहेंगे।

अचानक कहीं से थोड़ी बहुत आय होगी परन्तु खर्चा अधिक होगा। आय होने से पहले ही खर्चा तय हो जाएगा। इस पूरे अन्तर्दशाकाल में खर्चा अधिक होगा आय कम होगी, अनावश्यक खर्चा भी बहुत होगा। क्रोध पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक है क्योंकि इस समय निरर्थक क्रोध खराब परिणाम दे सकता है। आध्यात्म में मन लगेगा या पूजा-पाठ बहुत करने की इच्छा होगी। जीवनसाथी के लिए समय अच्छा है और कुछ बाधाओं के बाद कामकाज में प्रगति बनी रहेगी। इस समय गृह कलह को रोकने के उपाय जो करेंगे, उनमें वास्तु उपाय काम करेंगे।

गुरु-गुरु (14.05.13 से 03.07.15) बृहस्पति की महादशा 16 वर्ष तक चलेगी और प्रथम अन्तर्दशा में ही जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत मिलने लग जाएंगे। भूमि-भवन से संबंधित गतिविधियां तेज हो जाएंगी। आप जैसे-तैसे करके मकान की कोशिश करेंगे या कोई व्यावसायिक कार्य हेतु उपाय करेंगे। जीवनसाथी से संबंधित परिणाम इस अन्तर्दशा में आएंगे। उनकी आजीविका क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आने के संकेत बन रहे हैं। इस समय यदि निर्णय संबंधी कोई गलती हो गई तो काफी समय तक दु:ख पाना पड़ेगा।

संतान के लिए यह बहुत शुभ समय है। उनके अध्ययन क्षेत्रों में या प्रगति के अन्य क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। आपको बहुत कोशिश करके अपने वजन को बढ़ने से रोकना चाहिए। आप एकदम लापरवाह हो जाएंगे और बाद में उसका पछतावा होगा। इस अवधि में आपके सारे काम आसानी से बनेंगे और जो सफलता पहले नहीं मिल रही थी वह अब मिलेगी। भाई-बहिनों के लिए यह समय अच्छा है परन्तु यदि छोटी भाभी हैं तो उनके लिए यह समय शुभ नहीं हैं या आपकी छोटी बहिन के पति के लिए यह समय ज्यादा अच्छा नहीं हैं। कोई न कोई समस्या चलती ही रहेगी। यदि आप संतान इत्यादि से निवृत्त हो चुके हैं अर्थात् और संतान नहीं चाहिए तब तो यह समय साधारण है परन्तु यदि अभी भी संतान की कामना है तो यह समय अनुकूल जा सकता है।

ग्रहों का गोचरफल:

2010 में ग्रह स्थितियां तेजी से बदलेंगी, घटनाएं तेज गति से घटेंगी और मान-सम्मान संबंधी प्रश्न उठेंगे। बहुत लोगों के बीच में आपको सावधानी से बर्ताव करना है और अपनी प्रतिष्ठा को बचाते हुए आगे कार्य करना है। गर्मियों के बाद जीवनसाथी के लिए अच्छा समय आ रहा है और आप स्वयं को भी आजीविका क्षेत्रों में कुछ करना चाहें तो मदद मिल सकती है। इस समय भागीदारी के कार्यों में सफलता मिल सकती है। आप जनसम्पर्क तेजी से बढ़ेंगे।

वर्ष 2011 में जनसम्पर्कों में बहुत बाधा आएगी और अप्रैल-मई में कई लोगों से असहमति उभर कर सामने आएगी और घर में कलह बढ़ेगी। इस समय आजीविका क्षेत्रों में बहुत अधिक दबाव महसूस करेंगे और यदि आपने व्यावसायिक निर्णय संबंधी कोई गलती कर दी तो पछताना पड़ सकता है। यह वर्ष भूमि-भवन में पैसे लगाने के लिए उपयुक्त है और या तो भूमि से लाभ होगा या भूमि क्रय करने हेतु प्रयास करेंगे।

वर्ष 2012 आमतौर से अच्छा जाएगा परन्तु आजीविका क्षेत्रों पर दबाव बना रहेगा। बहुत सारे संबंध खराब होने की नौबत आएगी। पिता के कठिन समय में अब थोड़ी राहत मिलेगी क्योंकि कन्या राशि से तुला की ओर जाते हुए शनि उनके बिगड़े हुए कामों को बना सकते हैं। अगस्त 2012 के बाद जब शनि तुला में आएंगे तो अगले ढाई वर्ष आपको भूमि संबंधी निर्णय करने में लगेंगे और कोई एक भूमि विक्रय करके उसके स्थान पर दूसरी लेने की योजना बना सकते हैं। अगर यह न हुआ तो वाहन बदलेंगे। आर्थिक दृष्टि से उन्नति का समय है परन्तु ऋण लेने की योजना बना सकते हैं।

इस हिसाब से 2013 ज्यादा अच्छा रहेगा जिसमें निश्चित रूप से भूमि संबंधी गतिविधियां होंगी। शनि और बृहस्पति आपके अनुकूल हैं और जीवन में विषमताओं के होते हुए भी अच्छे परिणाम देंगे।

यह विश्लेषण बिना आयु निर्णय के किया गया है।